हिंदी विवि में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आगाज

भाषा और मशीन का अन्योनाश्रय संबंध है-कुलपति मिश्र

भाषा विषय के साथ मध्यस्था करती है तथा हमें स्वतंत्र करती है। आज हमें देश के आपसी भाषाओं के साथ संबंध बनाने की जरूरत है। इससे हम एक-दूसरे के को जानते हैं। साथ ही दूसरे भाषा के मेथोडलॉजी के माध्यम से हिंदी को समृद्ध भी किया जा सकता है। उक्त कथन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रौधौगिकी अध्ययन केंद्र एवं

कंप्यूटेशनल भाषा विज्ञान द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि विवि के कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र ने कही। राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय-प्राकृतिक भाषा संसाधनः हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के नवीन पक्षों के संदर्भ में का आयोजन टी.एल.सी.एच.एस. एवं एल.डी.सी.-आईएल के तत्वाधान में आयोजित किया गया। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कुलपति मिश्र ने कहा कि भाषा और मशीन के साथ हम कैसे संबंध विकसीत करें और उसे प्रभावी बनाया जा सके।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. रमेश चन्द्र वर्मा ने भाषा को परंशक्ति के रुप में दर्शाते हुए कहा कि यह मानव को मानवेत्तर से अलग करता है। प्रो. वर्मा ने भाषा के संसाधन को मशीनी रूप में करने की बात कही। जिस तरह से मनुष्य का क्रमिक विकास होता है उसी तरह से भाषा का भी विकास होता है। मानव मस्तिष्क के आधार पर कंप्यूटर

को कितना बदला जा सकता है इस पर हम सभी को विचार करने की आवश्यकता है। गांधी का सपना था कि पूरे भारत में हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार हो ऐसे में यह विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय संगोष्ठी गांधी के सपनों को साकार कर रही है।

आमंत्रित अतिथि प्रो. इला कुमार ने सोचने की क्षमता को बढ़ाने की बात करते हुए कही कि कंप्यूटर के साथ मनुष्य के मस्तिष्क के सोचने की झमता कैसे बढ़ाई जाय इस पर बल देना जरूरी है। मनुष्य बचपन से ही भाषा सिखता है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल ने कहा कि हिंदी के विकास के साथ अन्य भाषाएं भी समृद्ध हो ताकि सभी भाषाओं का विकास हो सके। भाषा का एक सृजन रुप साहित्य है। आज हमें एनपीएल के सभी घटकों के विस्तार की आवश्यकता है।

टी.एल.सी.एच.एस. के अध्यक्ष प्रो. अरविन्द झा ने मुख्य रुप से कंप्यूटर और भाषा पर बल देते हुए उसके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझाया और कहा कि गणित के अल्गोरिथम के माध्यम से हम मशीनी अनुवाद और भाषा को समझ सकते हैं।

इस अवसर पर हिंदी विवि के अलावा भारतभर के संस्थानों से आए विद्यार्थी और शोधार्थियों ने अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। सत्र की शुरूआत में संगोंष्ठी स्मारिका का विमोचन किया गया। तीन दिनों के संगोष्ठी में 47 शोधपत्र प्रस्तुत किया जाएगा साथ ही पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन भी किया जाएगा।

संगोष्ठी के संयोजक सहायक प्रोफेसर पीयूष प्रताप सिंह ने स्वागत वक्तव्य दिया और संगोष्ठी निदेशक प्रो. विजय कुमार कौल ने सभी अतिथियों को संगोष्ठी के मुख्य बिन्दु ओं से परिचय कराया। धन्यवाद ज्ञापन विवि के कुलसचिव डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र और मंच संचालन सहायक प्रोफेसर धनजी प्रसाद ने किया। इस मौके पर विवि के प्रति कुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, प्रो. के.के. सिंह, प्रो. देवराज सिंह, प्रो. अन्नपूर्णा, सहायक प्रो. अनवर सिद्धकी और गोपाल सिंह सहित विश्वविद्यालय के विद्यार्थी और शोधार्थी मौजूद रहे।